

१९७० अक्टूबर ०० नं पार्टी नं १००० - शिक्षा वाचनवेक्षण बोर्ड द्वारा त्रिपुरा वाचनी

|    |  |           |         |
|----|--|-----------|---------|
| १। | ज्ञान सर्वेश याज्ञाशास्त्र इक टोथहो<br>टोथह याज्ञाशास्त्र ( योगाशिवी ) ,             | - शिक्षणि | शिक्षणि |
| २। | ज्ञान सर्वेश व उमा एवं याज्ञाशास्त्र इक, ए, वय, लि<br>एक है वय ०, लि एक है ०।        | - शिक्षणि | ,,      |
| ३। | ज्ञान योग बृहस्पति शिव, लि है,<br>लि वय है वय ।                                      | - शिक्षणि | ,,      |
| ४। | ज्ञान योग बृहस्पति शिवाध, ० लि, गोलमिन<br>है ०, रामेश्वरप विश्वाव वारिवी ।           | - शिक्षणि | ,,      |
| ५। | ज्ञान-ज्ञान एवं उपर्युक्ति, ० लि, गोलमिन<br>है ०, औ-वारिवी द्वारा द्वारा छोड़ा गया । | - शिक्षणि | ,,      |
| ६। | पद्मनाथ शिक्षा विद्यालय एवं लि द्वारा,<br>चाका कागज बनाये ।                          | - शिक्षणि | ,,      |
| ७। | ज्ञान योग बृहस्पति त्रिपुरा<br>चाका कागज बनाये ।                                     | - शिक्षणि | ,,      |
| ८। | ज्ञान योग बृहस्पति त्रिपुरा, लि है ० ।   | - शिक्षणि | ,,      |

#### १। शासिक आमृ, बायू ओ बदेश्वा गाँवा

त्रिपुरा ( १९७० ) शासिक आमृ, बायू ओ बदेश्वा गाँवा र शिक्षा विवरण इयोगा ।

#### २। शासिक शिक्षण विवरणी

त्रिपुरा ( १९७० ) शासिक शासिक शिक्षण विवरणी विवेचना करा ।

#### ०। वर्तित एवावार गामा विवरण

वर्तित एवावार गामा विवरण जन्य प्रज्ञावित गुरुगुमाव विवेचना ओ घूमोद्देव बरा ।

जन्य वाराटि घूमोद्देव बाराटि यत्पुरुष ।

60-9-98

**श्रीहृषीत प्रस्तुत : -** अनुमोदन करा देन। यद्यपि श्रीकाल्पनिका वैवहार योग्य होवावू-वामपक एवं दार्ढीगुलिर  
प्रमोऽप्नैवैषां व्योग्यादेव वैवहार करार कर्त्तव्यिषय शान्तिका ग्रन्थ स्वेच्छा द्वारा दागार्धीते बोर्डे  
प्रियदेवतार उद्देश्ये देन करा देह ।

**ଶ୍ରୀହାତୁ ପ୍ରମୁଦ୍ରା :-** ବିବେଚନା କରା ଲାଗୁ । ହେଉ ଅଣିଧାରେ ଗର୍ଭାର୍ଥୀ ପଦ୍ମଯାନୀ ପ୍ରମୁଦ୍ରାଜଳାନ୍ତ୍ରୀ ସର୍ବମୂଳା ପ୍ରମୁଦ୍ରା କରା ହେବ ।

**क्षमता श्रेष्ठीय ३ -** यह साहस्री शुद्धिगति वाला अधिकारी द्वारा व्यवस्था की जाति वर्ग के लिए उपलब्ध होना चाहिए। इसके बाद व्यवस्था की जाति वर्ग के लिए उपलब्ध होना चाहिए। इसके बाद व्यवस्था की जाति वर्ग के लिए उपलब्ध होना चाहिए।

## ४। एकूणी कर्तव्यादेव नीति एवं विर्त्तिः

एकूणी कर्तव्यादेव विलिते ४ (ज्ञान) इ दाँच एवं विर्त्तिश्च इत्या वदा ।

## ५। दिग्बन्ध नीतिः शास्त्रे तदावार नाम शब्दवाच शब्दम्

दिग्बन्ध नीतिः शास्त्रे तदावार नाम शब्दवाच उत्तमो विषयाति एवं तदावार शब्दम् तुल  
द्रुतीयात् इत्येति । एवं विषयात् एकाक्षरे इत्येति विषयाति विषयाति विषयात् ।

एवं शास्त्रे एकाक्षरे विषयात् एवं शब्दम् ।

## ६। १. दाँचेभवेत्वे वैकूटिक गाथा शब्दवाच

दैकूटिक गाथा शब्दवाचाद्वारा विकृत वाचादेव विषये देवे शशांकवैकूटिक गाथा शब्दवाचेर  
शूद्रगाम्याति विषयात् एवं एकूणोदय वदा ।

एवं विषयाति एकूणोदये वाचेभवेत् एवं शूद्रः ।

## ७। पश्चौप घट्टणीय विषये वैकूटिक

कठेत्वे शब्दावार एव, शिरो चक्राक्षेर गावने पश्चौप घट्टणीय विषये घैराप्ति वरणे विषयाति  
विषयात् वदा ।

एवं शूद्राच्चि पश्चौपोदये वाचेभवेत् एवं शूद्रः वदा ।

## ८। वाढ़ीय वृक्षाः

३९२७ लालेन शास्त्रे विषये एवं शूद्रः ४७९ लालेन शूद्राते विषय वर्णित एवं वाढ़ी विर्त्तिश्च इत्येति एवं  
जह शब्दाद्वारा विषयात् वदा । शब्दाद्वारा विषयात् एवं शूद्रः एवं शूद्राते विषयात् एवं शूद्रः ।

विषय वृक्ष इत्यानाम् शास्त्रे वास्तव एव शूद्रः एव शूद्रः ।

कठेवदेष्टे वाचाव वृक्षाः

(१) वैष्णव द्विष्ठा वृक्षः ।

०७-४

एकूणोदये वृक्षाः ।

३०-६-७८

**ग्रहीत प्रश्नाव १ :- वार्षिक वर्तमान वयस्साकृति ग्रन्थी द्वारा ।**

**ग्रहीत प्रश्नाव २ :- विवेचना करा देह । लिंगम् एविशार शार्दूलिं वदाराकृ १,००,०००/०१९४८  
प्रतिशेषं अस्ते वार्षिक ग्रन्थी ग्रन्थाकार वयस्सा ग्रन्थकर्त्ता द्वारा देह ।**

**ग्रहीत प्रश्नाव ३ :- जदुज्ञानव दक्षा देह । ऐष्टुग्निय वायामूलि द्वाक ग्रन्थग्रन्थाकार वयस्सा द्वेष्ट्र द्वेष्वार  
वद्वान्तु ग्रन्थकर्त्ता देह ।**

**ग्रहीत प्रश्नाव ४ :- जदुज्ञानव दक्षा देह । ग्रुप वरुभा ओ वाज्वर गुणगुणावृति वधान्तार विद्वित्री इतिकौशारम  
वार्षिकेय वक्तुव ग्रन्थकर्त्ता देहिणे ग्रन्थकर्त्ता देहिणे वयस्सा ग्रन्थकर्त्ता देह ।  
द्वार्दलिं वग्नाम्भ देहिणे ग्रन्थकर्त्ता देहिणे वयस्सा ग्रन्थकर्त्ता देह ।**

**ग्रहीत प्रश्नाव ५ :- १९२० शालेय वग्नाम्भट्टेव वार्षिकै १९८१(१) १९८०-क जनुक्रमद यद्य विश्ववर्णित वग्नाम्भ  
प्रति ग्रन्थज्ञानव दक्षा देह । जनुक्रमित वयस्सार वार्षिकै द्वाक वार्षिकै वार्षिकै करा दावेद्वा ।  
वार्षिकै विवेचनद्वार लालोक देहिणे १२४ दावो । वा देव शत्यो वार्षिकै वार्षिकै मन्त्र्युर्ण द्वेष्ट द्वेष ।  
वार्षिकै धैवा दाविति वार्षिकै तावेज दाविति विद्व वार्षाक्ता, दावाक्ता द्विवादिति विद्व द्वार्षिते द्वेष ।  
द्विविति वार्षिकै ग्रन्थाकर्त्ता देहिणे वयस्सा ग्रन्थाकर्त्ता देहिणे वयस्सा ग्रन्थाकर्त्ता देहिणे । वार्षी वार्षान्त दक्षा र तावित  
वयस्सा वग्नाम्भ देहिणे वयस्सा ग्रन्थाकर्त्ता देहिणे वयस्सा ग्रन्थाकर्त्ता देहिणे । वयस्सा वग्नाम्भ दक्षा र तावित  
विवेचनद्वार विवेचने ग्रन्थकर्त्ता देहिणे वयस्सा ग्रन्थाकर्त्ता देहिणे ।**

**वार्षिकै वयस्सा ग्रन्थाकर्त्ता देहिणे वयस्सा ग्रन्थाकर्त्ता देहिणे ।**

**ग्रन्थाकर्त्ता देहिणे वयस्सा ग्रन्थाकर्त्ता देहिणे ।**

४।

ग्रन्थालयी विनियोग कर्तव्य विषिटे गोप-चालित घोषित रक्षा

कम्पेन्टेंटदेहे एवापात घजदोरजाम्युग्मि विनियोग कर्तव्य विषिटे गोप-चालित घोषित रक्षा ५,०००/०० (गोप-चाल इतार) टोका शुद्ध वर्जन विवरणि विवेचना ० घटुव्याप्त दरा।

एव्व घोषित रक्षालाई वात्सल्ये वरिष्ठ ।

५०।

कम्पेन्टेंट विनियोग विषिटे शही पात्राव द्वारा दर्शित रक्षा

कम्पेन्टेंट विनियोग सर्वत्र कम्पेन्टेंट विनियोग द्वारा विनियोग इकायावे दर्शित रक्षा ५०/०० दर्शे १००/०० टोका दर्शित रक्षा पात्राव विवेचना दर्शा ।

*बाबीराम*  
क्रान्तिकारी एकाज्ञानिक अकिल  
पाता काउन्सिले

७०-६-७८

৩০-৬-৭৮

শ্রেষ্ঠ প্রদান ১ - পরিষেবা প্রদান করা আছে। পিতৃব জন্মোত্তু শাইল'জ পুঁজি গৃহ ও যুক্তি সংস্থা  
বিনিয়োগ ইন্ডাস্ট্রি লিমিটেড দ্বারা প্রদান করা হচ্ছে ৫,১০১/০০ টাকা পুঁজি ব্যবস্থা  
করা আছে।

ক্ষেত্রে উপর্যুক্ত প্রদান পুঁজি প্রদান করা আছে।

শ্রেষ্ঠ প্রদান ২ - পিতৃব জন্মোত্তু আছে। ক্ষেত্রে প্রদান করা হচ্ছে ৫০/০০ টাকা এবং  
গৃহিণী ৪০০/০০ টাকা পুঁজি প্রদান করা আছে।

ক্ষেত্রে প্রদান  
ক্ষেত্রে প্রদান করা আছে।

৩০-৬-৭৮

লে: ক্ষেত্র  
সভাপতি

ক্ষেত্রে প্রদান করা আছে।

৩০-৬-৭৮